اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 324 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**152 रह़मत भरी ह़िकायात**" के सफ़ह़ा नम्बर 251 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ हुसैन बिन अह़मद कव्वाज़ बिस्तामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ख़्वाब में अबू सालेह़ मुअज़्ज़िन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देखना चाहता हूं, चुनान्चे, मेरी दुआ़ क़बूल हुई और मैं ने ख़्वाब में उन्हें अच्छी ह़ालत में देख कर पूछा : ऐ अबू सालेह़ ! मुझे अपने यहां के ह़ालात की ख़बर दीजिये। तो फ़रमाया : ऐ अबू ह़सन ! अगर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी पर दुरूदे पाक की कसरत न की होती, तो मैं हलाक हो गया होता। (152 रह़मत भरी ह़िकायात, स. 251)

*अपने ख़त़ा वारों को अपने ही दामन में लो*
*कौन करे येह भला तुम पे करोड़ों दुरूद*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

**दो मदनी फूल :-**

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

## बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْبِ، اُذْكُرُوااللّٰهَ، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

## बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# हाकिमे सब्ज़वार की तौबा

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सफ़रे हिन्द के दौरान जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का गुज़र अ़लाक़ा सब्ज़वार (मौजूदा सूबा खुरासान रज़वी ईरान) से हुवा, तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने वहां एक बाग़ में क़ियाम फ़रमाया, जिस के वस्त़ में एक खुश्नुमा हौज़ था । येह बाग़ ह़ाकिमे सब्ज़वार का था, जो बहुत ही ज़ालिम शख़्स था, उस का मा'मूल था कि वोह अपने इस बाग़ में आ कर शराब पीता और नशे में ख़ूब शोरो ग़ुल मचाया करता था । जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नवाफ़िल अदा करने के लिये उस बाग़ में मौजूद हौज़ से वुज़ू करने लगे, तो मुहाफ़िज़ों ने अपने ह़ाकिम की सख़्त गीरी का ह़ाल अ़र्ज़ किया और दरख़्वास्त की, कि यहां से तशरीफ़ ले जाएं, कहीं ह़ाकिम आप को कोई नुक़्सान न पहुंचा दे । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा ह़ाफ़िज़ो नासिर (या'नी ह़िफ़ाज़त व मदद फ़रमाने वाला) है । इसी दौरान ह़ाकिम बाग़ में दाख़िल हुवा और सीधा हौज़ की त़रफ़ आया, जब उस ने अपनी ऐ़शो इ़श्रत की जगह पर एक अजनबी दरवेश (या'नी साह़िबे मा'रिफ़त) को देखा तो आग बगोला (या'नी गुस्से से लाल) हो गया और इस से पहले कि वोह कुछ कहता, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक नज़र डाली और उस की काया पलट दी । ह़ाकिम, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के जलाल की ताब न ला सका और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा । ख़ादिमों ने मुंह पर पानी के छींटे मारे, जूंही होश आया फ़ौरन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के क़दमों में गिर कर बुरे अ़क़ीदों और गुनाहों से ताइब हो गया और आप के दस्ते मुबारक पर बैअ़त हो गया ।

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की इनफ़िरादी कोशिश से ह़ाकिमे सब्ज़वार ने ज़ुल्म और ज़ोर ज़बरदस्ती से जम्अ़ की हुई सारी दौलत, अस्ल मालिकों को लौटा दी और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की सोह़बत में रहने लगा । ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कुछ ही अ़र्से में उसे फ़ुयूज़े बात़िनी से माला माल कर के ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और वहां से रुख़्सत हो गए । (अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 511, मुलख़्ख़सन)

*हर चीज़ मिली जामे महब्बत जो पिलाया*
*दुन्या की हुकूमत दो, न दौलत दो न सरवत*
*ख़्वाजा है ज़माने ने बड़ा मुझ को सताया*
*क़दमों से लगा लो, मुझे क़दमों से लगा लो*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 532)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि ख़्वाजए ख़्वाजगान, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ किस क़दर अरफ़अ़ व आ'ला शानो शौकत वाले थे । यक़ीनन येह आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामत थी कि आप की निगाहे विलायत, जब एक ज़ालिमो जाबिर और शराबी शख़्स पर पड़ी, तो उस के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई और वोह अपने गुनाहों और बुरे अ़क़ीदों से ताइब हो कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सोह़बत की बरकत से परहेज़गारों में शामिल हो गया ।

*इस्तिक़ामत मज़्हबे इस्लाम पर मिल जाए काश !*
*हाथ उठा कर, कर दुआ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**आइये !** अब सुल्ता़नुल आ़रिफ़ीन, ख़्वाजए ख़्वाजगान ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुख़्तसर ह़ालाते ज़िन्दगी के बारे में सुनते हैं :

## विलादते बा सआ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती अजमेरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 537 हि. में ईरान के अ़लाके़ "**सन्जर**" में पैदा हुवे । (इक़्तिबासुल अन्वार, स. 345)

## नाम व सिलसिलए नसब

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इस्मे गिरामी ह़सन है और आप नजीबुत्त़रफै़न या'नी ह़सनी व ह़ुसैनी सय्यिद हैं । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अल्क़ाब बहुत ज़ियादा हैं, मगर मश्हूरो मा'रूफ़ अल्क़ाब में मुईनुद्दीन, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सुल्ता़नुल हिन्द, वारिसुन्नबी और अ़ता़ए रसूल वग़ैरा शामिल हैं ।

*या मुईनुद्दीन अजमेरी ! करम की भीक दो*
*अज़ पए ग़ौसो रज़ा, ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 536)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## वालिदैने करीमैन

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना गियासुद्दीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शुमार "**सन्जर**" के अमीरों और सरदारों में होता था, इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़गार और साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे। नीज़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदा माजिदा, बीबी माहे नूर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا भी अक्सर अवक़ात इबादतो रियाज़त में मश्ग़ूल रहने वाली नेक सीरत ख़ातून थीं। (अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 506, मुलख़्ख़सन)

जब हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पन्द्रह साल की उ़म्र को पहुंचे तो वालिदे मोह़तरम का विसाले पुर मलाल हो गया। विरासत में एक बाग़ और एक पन चक्की (या'नी पानी की मदद से चलने वाली आटा पीसने की चक्की) मिली, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसी को ज़रीअ़ए मआ़श बना लिया और ख़ुद ही बाग़ की निगेहबानी करते और दरख़्तों को पानी देते।

(मिरआतुल अस्रार, स. 593, बित्तग़य्युर)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह वोही बाग़ था जिस में एक वली का अदबो एह़तिराम और उन की ख़िदमत करने की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को विलायत के आ'ला मर्तबे पर फ़ाइज़ फ़रमा दिया। जैसा कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले "**ख़ौफ़नाक जादूगर**" के सफ़ह़ा 10 पर फ़रमाते हैं कि एक रोज़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने बाग़ में पौदों को पानी दे रहे थे कि उस दौर के मश्हूर मज्ज़ूब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम क़ुन्दौज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बाग़ में दाख़िल हो गए। जूंही आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस मक़्बूल बन्दे पर पड़ी, फ़ौरन सारा काम छोड़ कर दौड़े और सलाम कर के दस्त बोसी की और निहायत ही अदब से एक दरख़्त के साए में बिठाया, फिर

उन की ख़िदमत में ताज़ा अंगूरों का एक ख़ौशा इन्तिहाई आजिज़ी के साथ पेश किया और दो ज़ानू हो कर बैठ गए। **अल्लाह** के वली को उस नौजवान बाग़बान का अन्दाज़ भा गया, ख़ुश हो कर बग़ल से एक खली का टुक्ड़ा निकाला और चबा कर ख़्वाजा साहिब رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मुंह में डाल दिया। खली का टुक्ड़ा जूंही हल्क़ से नीचे उतरा, ख़्वाजा साहिब رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के दिल की कैफ़िय्यत यक दम बदल गई और दिल दुन्या से उचाट हो गया। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने बाग़, पन चक्की और साज़ो सामान बेच डाला, सारी क़ीमत फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम कर दी और हुसूले इल्मे दीन की ख़ातिर राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए। (मिरआतुल अस्रार, स. 593, बित्तग़य्युर)

*इस्तिक़ामत मज़्हबे इस्लाम पर मिल जाए काश !*
*हाथ उठा कर, कर दुआ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 538)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## सुल्तानुल हिन्द के सफ़र

सुल्तानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने 15 बरस की उ़म्र में हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र इख़्तियार किया और समरक़न्द में ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना शरफ़ुद्दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर बा क़ाइदा इ़ल्मे दीन का आग़ाज़ किया। पहले पहल क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ किया और बा'दे अज़ां उन्ही से दीगर उ़लूम ह़ासिल किये।

(अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508, मुलख़्ख़सन)

मगर जैसे जैसे इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते गए, ज़ौक़े इ़ल्म बढ़ता गया, चुनान्चे, इ़ल्म की प्यास बुझाने के लिये बुख़ारा का रुख़ किया और शोहरए आफ़ाक़, आ़लिमे दीन मौलाना हुसामुद्दीन बुख़ारी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की शागिर्दी इख़्तियार की और फिर उन्ही की शफ़्क़तों के साए में आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने थोड़े ही अ़र्से में उस वक़्त के राइज तमाम दीनी उ़लूम की तक्मील कर ली। इस त़रह़ आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने समरक़न्द और बुख़ारा में मजमूई त़ौर पर तक़रीबन पांच साल हुसूले इ़ल्म के लिये क़ियाम फ़रमाया।

(अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508, मुलख़्ख़सन)

बहर ह़ाल इस अ़र्से में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील तो हो चुकी थी, मगर जिस तड़प की वज्ह से घर बार को ख़ैर बाद कहा था, उस की तस्कीन अभी बाक़ी थी। चुनान्चे,

मुर्शिदे कामिल की तलाश में बुख़ारा से ह़िजाज़ का रख़्ते सफ़र बांधा। रास्ते में जब नीशापूर (सूबा ख़ुरासान, ईरान) के नवाह़ी अ़लाक़े "**हारवन**" से गुज़र हुवा और मर्दे क़लन्दर, क़ुत़्बे वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्माने हारवनी चिश्ती رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का चर्चा सुना तो फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे और उन के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त कर के सिलसिलए चिश्तिय्या में दाख़िल हो गए। (मिरआतुल अस्रार, स. 594, मुलख़्ख़सन) अल ग़रज़ आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सारी ज़िन्दगी रसूले हाशिमी, मक्की मदनी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशादाते आ़लिया को आ़म करने के लिये वक़्फ़ फ़रमा दी थी।

*तेरी उल्फ़त में जियूं तेरी मह़ब्बत में मरूं*
*हो करम ऐसा शहा ! ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 537)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ख़्वाजा साहिब رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ज़ौक़े इबादत और सादगी

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत ही मुत्तक़ी व परहेज़गार थे और क्यूं न हो कि क़ुरआने करीम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वलियों की अ़लामत, परहेज़गारी भी बयान फ़रमाई है। जैसा कि इरशादे रब्बानी है :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾

(پ۱۱، یونس: ۶۲-۶۳)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *सुन लो ! बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म वोह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।*

चुनान्चे, आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की परहेज़गारी के बारे में बयान किया गया है कि आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हमेशा बा वुज़ू रहने के आ़दी थे, अक्सरो बेश्तर यादे इलाही में गुम रहते और आंखें बन्द रखते, आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शौक़े तिलावत और ज़ौक़े इबादत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि

हर दिन और हर रात में एक एक बार ख़त्मे कुरआन फ़रमाया करते, नीज़ हर ख़त्मे कुरआन पर हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आती कि हम ने तुम्हारा ख़त्मे कुरआन क़बूल फ़रमा लिया, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रातें इबादत में गुज़रतीं और दिन रोज़े की ह़ालत में गुज़रते थे, सिर्फ़ शाम के वक़्त थोड़ी सी सूखी रोटी पानी में भिगो कर तनावुल फ़रमा लिया करते, अक्सर इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाया करते थे, सादगी का येह आ़लम था कि पैवन्द लगे हुवे, मगर साफ़ सुथरे कपड़े ज़ेबे तन किया करते थे ।

(सीरतुल अक़्ताब, स. 136, मुलख़्ख़सन)

*दिल से दुन्या की मह़ब्बत की मुसीबत दूर हो*
*दे दो इ़श्क़े मुस्तफ़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 537)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## रौज़ए अक़्दस से मुईनुद्दीन का लक़ब

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन सन्जरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्माने हारवनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से विलायत के मर्तबे पर फ़ाइज़ हो गए, तो उन की इजाज़त से सफ़र पर रवाना हो गए । दौराने सफ़र आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जहां भी क़ियाम फ़रमाते, अगर वहां आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़रा भी शोहरत हो जाती तो कहीं और तशरीफ़ ले जाते, यूं मुख़्तलिफ़ मक़ामात से होते हुवे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मक्कए मुकर्रमा पहुंचे और कुछ रोज़ वहां क़ियाम करने के बा'द मदीनए मुनव्वरा चले आए और रौज़ए रसूल की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवे और उसी के क़रीब मुक़ीम हो गए, एक रोज़ सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से येह बिशारत मिली कि ऐ मुईनुद्दीन ! तू हमारे दीन का मुईन (या'नी दीन का मददगार) है, तुझे हिन्द की विलायत अ़ता की, अजमेर जा, तेरे वुजूद से बे दीनी दूर होगी और इस्लाम की रौनक़ में इज़ाफ़ा होगा । (सीरतुल अक़्ताब, स. 142, मफ़्हूमन व मुलख़्ख़सन)

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मदीनतुल हिन्द अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ लाए। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुसल्सल कोशिशों से लोग जूक़ दर जूक़ दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने लगे।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सर ज़मीने हिन्द में बरसों से **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत नहीं की जाती थी, ज़ुल्मो सितम, ह़क़ तलफ़ी और क़त्लो ग़ारत को इ़ज़्ज़तो शान तसव्वुर किया जाता था, चुनान्चे, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म पर जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه हिन्द की सर ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो इस के अजनबी माह़ोल और पुर ख़त़र ह़ालात में इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर बात़िल क़ुव्वतों का मुक़ाबला किया, बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुसल्सल कोशिशें रंग लाईं और हिन्द में हर त़रफ़ इस्लाम का परचम लहराने लगा।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यहां येह बात भी ज़ेह्न नशीन रखनी चाहिये कि ख़्वाजए हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब हिन्द में इस्लाम की शम्अ़ रौशन करने तशरीफ़ लाए, तो अपने साथ लश्करे जर्रार, तीरो तल्वार या किसी भी क़िस्म का हथयार हरगिज़ हरगिज़ साथ न लाए, बल्कि इस्लामी तहज़ीब, ह़ुस्ने अख़्लाक़ और बुलन्द किरदार साथ ले कर आए, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आयाते क़ुरआनिया, अह़ादीसे नबविय्या और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन के ज़रीए लोगों की इस्लाह़ फ़रमाई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुबारक मजालिस में शरीअ़त व त़रीक़त और ह़क़ीक़तो मा'रिफ़त की त़रफ़ लोगों को मुतवज्जेह किया जाता नीज़ फ़राइज़ व सुन्नत, पाकीज़गी व त़हारत, सिद्क़ो इख़्लास, ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा और मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत व मह़ब्बत का दर्स दिया जाता था।

जैसा कि एक मरतबा लोगों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में येह सुवाल किया कि वोह कौन सा नेक अ़मल है, जो बन्दे को अ़ज़ाबे दोज़ख़ से मह़फ़ूज़ रखेगा ? तो इरशाद फ़रमाया : बे बसों की मदद करना, ज़रूरत मन्दों की ज़रूरत पूरी करना और भूकों को खाना खिलाना। इस के बा'द इरशाद

फ़रमाया कि जिस शख़्स के अन्दर तीन ख़स्लतें होंगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दोस्त रखेगा। (1) दरया जैसी सख़ावत (2) आफ़ताब जैसी शफ़्क़त और (3) ज़मीन जैसी तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी।

(सीरतुल अक़्ताब, स. 140, बित्तग़य्युर क़लील)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत सी ज़ाहिरी व बात़िनी ख़ूबियों के मालिक होने के साथ साथ निहायत ही अ़ज़मतो शान वाले बुज़ुर्ग और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बर गुज़ीदा वली भी थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की निगाहे फ़ैज़ की बदौलत न सिर्फ़ बहुत से गुनाहगारों ने तौबा की बल्कि लाखों ग़ैर मुस्लिमों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दस्ते ह़क़ परस्त पर इस्लाम भी क़बूल किया। आइये ! ख़्वाजा साह़िब की चन्द ईमान अफ़रोज़ करामात सुनते हैं, मगर इस से पहले करामत और वली की ता'रीफ़ भी ज़ेह्न नशीन कर लीजिये। चुनान्चे,

## करामत की ता'रीफ़

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहारे शरीअ़त में करामत की ता'रीफ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : वली से जो ख़िलाफ़े आ़दत बात सादिर हो, उस को करामत कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा अव्वल, 1 / 58, बित्तग़य्युर क़लील) नीज़ करामत का हुक्म बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : करामते औलिया ह़क़ है, इस का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) गुमराह है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा अव्वल, 1 / 269)

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : मोमिन मुत्तक़ी से अगर कोई ऐसी नादिरुल वुजूद व तअ़ज्जुब ख़ेज़ चीज़ सादिर व ज़ाहिर हो जाए, जो आ़म तौ़र पर आ़दतन नहीं हुवा करती, तो उस को "**करामत**" कहते हैं। इसी क़िस्म की चीज़ें अगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ए'लाने नुबुव्वत से पहले ज़ाहिर हों तो "**इरहास**" और ए'लाने नुबुव्वत के बा'द हों तो "**मो'जिज़ा**" कहलाती हैं और अगर आ़म मोमिनीन से इस क़िस्म की चीज़ों का ज़ुहूर हो तो उस को

"**मऊ़नत**" कहते हैं और किसी काफ़िर से कभी उस की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ इस क़िस्म की चीज़ ज़ाहिर हो जाए तो उस को "**इस्तिदराज**" कहा जाता है। (करामाते सहा़बा, स. 36) ख़िलाफ़े आ़दत बात से मुराद वोह काम है जो आ़म तौ़र पर हर किसी इन्सान से ज़ाहिर न होता हो मसलन हवा में उड़ना, पानी पर चलना वगै़रा अफ़आ़ल कि आ़म तौ़र पर आदमी न तो हवा में उड़ सकता है और न ही पानी पर चल सकता है। (फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया, स. 46)

## वली की ता'रीफ़

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सा'दुद्दीन मस्ऊ़द बिन उ़मर तफ़्ताज़ानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : वली उस शख़्स को कहते हैं जो मुमकिन ह़द तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात की मा'रिफ़त (या'नी पहचान) रखता हो, इबादात की पाबन्दी करता हो और हर क़िस्म के गुनाहों, लज़्ज़ात और शहवात से बचता हो। (شرح العقائد، کرامات الاولیاء حق، ص۳۱۳)

*तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे*
*मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! अब ख़्वाजा साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चन्द ईमान अफ़रोज़ करामात सुनते हैं।

## बे गुनाह मक़्तूल को दोबारा ज़िन्दा कर दिया

एक मरतबा किसी हा़किम ने एक शख़्स को बे गुनाह सूली पर चढ़वा दिया। मक़्तूल की मां रोती हुई ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में फ़रयाद के लिये हा़ज़िर हुई और कहने लगी कि हा़किम ने मेरे लड़के को ना ह़क़ फांसी दे दी है, ख़ुदा के वासित़े मेरी मदद कीजिये। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस वक़्त वुज़ू कर रहे थे, फ़रयाद सुन कर अपना अ़सा मुबारक हाथ में लिया और उस औ़रत के साथ उस के मक़्तूल बेटे की त़रफ़ रवाना हो गए। मुरीदीन भी साथ साथ चल दिये कि देखें आज पर्दए ग़ैब से क्या वाक़िआ़ रूनुमां होता है। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस मक़्तूल के पास पहुंचे तो कुछ देर तक ख़ामोश खड़े उस की लाश को देखते रहे और फिर अ़सा के ज़रीए़ उस की गरदन को छू कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ मज़्लूम !

अगर वाक़ेई तुझे बे क़ुसूर मारा गया है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ज़िन्दा हो जा। ज़बाने मुबारक से इन अल्फ़ाज़ का निकलना था कि मुर्दा उठ खड़ा हुवा और आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़दमों में गिर गया। आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे अपनी मां के साथ जाने की इजाज़त दी और फिर अपने मुरीदों से फ़रमाया कि बन्दए मोमिन का अपने रब عَزَّوَجَلَّ से इतना तअ़ल्लुक़ तो ज़रूर होना चाहिये कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कोई दरख़्वास्त करे तो वोह क़बूल हो जाए। (सीरतुल अक़्ताब, स. 142, मुलख़्ख़सन)

*काश ! क़िस्मत से मदीने में शहादत पाऊं मैं*
*हाथ उठा कर, कर दुआ़ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 539)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ताजुल आ़शिक़ीन, सुल्ताुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामात में से एक करामत येह भी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को दूर दराज़ की आवाज़ें सुनने की ने'मते उ़ज़्मा से सरफ़राज़ फ़रमाया है और ऐसा क्यूं न हो कि आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब व मुक़र्रब औलिया में से हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे अपना मह़बूब बना लेता है तो, ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा उस के लिये दूरो नज़दीक की आवाज़ें सुनना या चीज़ें देख लेना, ज़रा भी मुश्किल नहीं रहता। जैसा कि :

## मह़बूबाने ख़ुदा का मक़ाम

ताजदारे ह़रम, सरापा जूदो करम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी, मैं ने उस के साथ ए'लाने जंग किया, मेरे किसी बन्दे ने फ़राइज़ की अदाएगी से ज़ियादा मह़बूब शै से मेरा क़ुर्ब ह़ासिल नहीं किया और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है, यहां तक कि मैं उसे अपना मह़बूब बना लेता हूं और जब मैं उसे मह़बूब बना लेता हूं, तो मैं उस के कान बन जाता हूं, जिन से वोह सुनता है, उस की आंखें बन जाता हूं, जिन से वोह देखता है, उस के हाथ बन जाता हूं, जिन से वोह

पकड़ता है और उस के पाउं बन जाता हूं, जिन से वोह चलता है, अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो मैं उसे ज़रूर अ़ता फ़रमाता हूं और अगर किसी चीज़ से मेरी पनाह चाहे, तो मैं उसे ज़रूर पनाह अ़ता फ़रमाता हूं।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، حدیث: ۶۵۰۲، ۴/۲۴۸)

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान कर्दा ह़दीसे कुद्सी का मा'ना और मन्सबे मह़बूबिय्यत की अ़ज़मत को बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : बन्दा जब नेकियों की पाबन्दी करता है, तो वोह ऐसे बुलन्द मक़ाम पर जा पहुंचता है कि जिस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि मैं उस के कान और आंखें बन जाता हूं (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अपने बन्दे के कान, आंख, हाथ और पाउं बन जाने का मत़लब येह है कि) **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के जलाल का नूर जब उस बन्दए मह़बूब के कानों में सरायत करता है, जिस की बरकत से वोह दूरो नज़दीक की हर आवाज़ को सुन लेता है, जब वोह नूर उस की आंखों में सरायत करता है, तो वोह दूरो नज़दीक की हर चीज़ को मुलाह़ज़ा कर लेता है और येही नूर जब बन्दए मह़बूब के हाथों में जल्वागर होता है, तो वोह दूरो नज़दीक के मुश्किल से मुश्किल (और इन्तिहाई ह़ैरत अंगेज़ क़िस्म के) उमूर सर अन्जाम देने पर भी क़ादिर हो जाता है। (तफ़्सीरे कबीर, अल कहफ़, तह़्तुल आयत : 9 ता 12, 7 / 436)

आइये ! दूरो दराज़ की आवाज़ सुन लेने के मुतअ़ल्लिक़ ताजुल मुक़र्रबीन, रहनुमाए कामिलीन ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की एक करामत आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे,

## दूर की आवाज़ को भी समाअ़त फ़रमा लिया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 106 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"ग़ौसे पाक के ह़ालात"** के सफ़ह़ा 67 पर है कि जिस वक़्त हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बग़दादे मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाया : قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللهِ मेरा येह क़दम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर वली की गरदन पर है। तो उस वक़्त सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपनी जवानी के दिनों में खुरासान के पहाड़ों में इबादत करते थे, वहां बग़दाद शरीफ़ में इरशाद होता है और यहां ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपना सर झुका लिया और इतना झुकाया कि सर मुबारक ज़मीन तक जा पहुंचा, फिर फ़रमाया : بَلۡ قَدَمَاكَ عَلٰی رَاۡسِیۡ وَعَیۡنِیۡ बल्कि आप के दोनों क़दम मेरे सर और मेरी आंखों पर भी हैं ।

*जब से तू ने क़दमे ग़ौस लिया है सर पर   औलिया सर पर क़दम लेते शाहा तेरा*

*न क्यूं कर सल्तनत दोनों जहां की उन को ह़ासिल हो*

*सरों पर अपने लेते हैं जो तल्वा ग़ौसे आ'ज़म का*

صَلُّوۡاعَلَی الۡحَبِیۡب!     صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की शानो अज़मत और मह़ब्बतो अ़क़ीदत से सीनों को पुर नूर करने, फ़ैज़ाने औलिया से फ़ैज़याब होने और अपने दिल में इ़ल्मो अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, नीज़ ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम **"चौक दर्स"** भी है । दर्सो बयान के ज़रीए लोगों को नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वालों की भी क्या ख़ूब शानें होती हैं । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि जिस ने भलाई का हुक्म दिया और बुराई से मन्अ़ किया और लोगों को मेरी फ़रमा बरदारी की त़रफ़ बुलाया, वोह क़ियामत के दिन मेरे अ़र्श के साए में होगा । (حِلۡیَۃُ الۡاولیاء، کعب الاحبار، ۲/ ۳۶، رقم: ۷۷۱۶ملتقطاً)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना दीन का क़ुत़्बे आ'ज़म है (या'नी ऐसा अहम रुक्न है कि इस से दीन की तमाम चीज़ें वाबस्ता हैं) इसी अहम काम के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया । (اِحیاءالعُلوم، کتاب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، ۲/۳۷۷)

आइये ! बतौरे तरग़ीब चौक दर्स की एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

## राना बद मआ़श

सूबा उत्रानचल (हिन्द) के एक बीस साला नौजवान इस्लामी भाई ने जो कुछ लिख कर दिया, वोह कुछ तब्दीली के साथ पेशे ख़िदमत है : मैं बुरी सोहबत के बाइस कमो बेश चौदह साल की उ़म्र ही से जराइम के दलदल में फंस चुका था। शराब पीना और औ़रतों का पीछा करना, मेरा मह़बूब मश्ग़ला था। फिर मैं ने बद मआ़शी शुरूअ़ कर दी। लोगों से बे वज्ह लड़ना, मार पीट करना, मेरी आ़दत में शामिल हो गया, यहां तक कि मैं **"राना बद मआ़श"** के नाम से पहचाना जाने लगा। मैं उ़म्र में ज़रूर छोटा था, मगर मैं किसी से डरे बिग़ैर सामने वाले पर, पै दर पै वार करना शुरूअ़ कर देता था। हर त़रफ़ मेरी धाक बैठ गई, लोग मेरे नाम से डरने लगे। वालिदैन मुझ से बेज़ार हो चुके थे, मगर बे बस थे। मेरे काले करतूत दिन ब दिन बढ़ते जा रहे थे। एक दिन गली के किनारे पर एक सब्ज़ इमामे वाले इस्लामी भाई को **चौक दर्स** देता देख कर मैं क़रीब जा खड़ा हुवा, जो कुछ सुना वोह मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं ने किताब पर नज़र डाली तो उस पर **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** लिखा था। दर्स देने वाले इस्लामी भाई ने मुझ से बड़ी मह़ब्बत के साथ मुलाक़ात की और इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश की। फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स ने मेरे अन्दर हलचल मचा रखी थी, लिहाज़ा मैं ने हामी भर ली और आ़शिक़ाने रसूल के हमराह तीन दिन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करते हुवे **"जनकपूर"** पहुंचा और मज़ीद तीन दिन के लिये राहे ख़ुदा में **"जगन्नाथपूर"** जाने वाले मदनी क़ाफ़िले के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **चौक दर्स और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत की बरकत से** मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, मैं ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और दाढ़ी शरीफ़ सजाने की भी निय्यत कर ली। दुआ़ फ़रमाइये कि रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मुझे इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

मेरे घरवाले मुझ में आने वाले इस मदनी इन्क़िलाब से बे इन्तिहा ख़ुश हैं। वालिदए मोह़तरमा दा'वते इस्लामी के लिये ख़ूब दुआ़एं करती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ समेत मेरे घरवालों ने सिलसिलए आ़लिय्या, क़ादिरिय्या, रज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया है।

*बख़्त खुल जाएंगे, क़ाफ़िले में चलो*
*जुर्म धुल जाएंगे, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## आग मुईनुद्दीन की जूती को भी न जला सकेगी

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आइये ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अब एक ऐसी करामत सुनते हैं कि जिस की बरकत से कई ग़ैर मुस्लिम दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुवे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में रह कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दों में शामिल हो गए। चुनान्चे,

एक मरतबा कुछ ग़ैर मुस्लिम ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवे, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन पर निगाह डाली तो आप की हैबत की वज्ह से वोह लोग कांपने लगे और उन के चेहरे पीले पड़ गए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें ग़ैरुल्लाह की इ़बादत से बाज़ आने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने की दा'वत देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि जब तक ख़ुदा तआ़ला की इ़बादत न करोगे, दोज़ख़ की आग से छुटकारा नहीं पा सकते। क़रीब ही आग भी रौशन थी, लिहाज़ा उन्हों ने कहा : ऐ ख़्वाजा ! आप तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं ना, अगर येह आग आप को न जलाए, तो हम मुसलमान हो जाएंगे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से येह आग मुईनुद्दीन को तो क्या, इस की जूती को भी नहीं जलाएगी, येह कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी जूतियां आग में डाल दीं और फ़रमाया : ऐ आग ! मुईनुद्दीन की जूतियों की ह़िफ़ाज़त करना, येह कहना था कि उसी वक़्त आग

ठन्डी हो गई और वहां मौजूद तमाम लोगों ने येह ग़ैबी आवाज़ सुनी कि **“आग की क्या मजाल जो मेरे दोस्त के जूते जला सके”** येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर वोह सब के सब ग़ैर मुस्लिम कलिमा पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए और आप की ख़िदमत में रह कर औलियाए कामिलीन बन गए। (इक्तिबासुल अन्वार, स. 354, बित्तग़य्युर क़लील)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## एक मज़्हबी पेश्वा का क़बूले इस्लाम

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने चालीस अ़क़ीदत मन्दों के साथ जब हिन्द के शहर, अजमेर तशरीफ़ लाए तो पहले पहल शहर के बाहर एक मैदान में दरख़्त के साए में पड़ाव किया, मगर चूंकि वहां अजमेर के एक ग़ैर मुस्लिम राजा के ऊंटों को बिठाया जाता था, लिहाज़ा राजा के आदमियों के कहने पर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां से उठ गए और अजमेर के **“अना सागर”** नामी मश्हूर तालाब पर आ कर सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई और इबादते इलाही में मश्ग़ूल हो गए, मगर वहां भी राजा के साथियों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को तक्लीफ़ें देना शुरूअ़ कर दीं। ह़त्ता कि एक बार तो राजा के साथियों के दिलों में नफ़रत व अ़दावत की ऐसी आग भड़की कि वोह बद बख़्त हथयारों से लेस हो कर ह़म्ला आवर हुवे, उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़ में मश्ग़ूल थे, नमाज़ से फ़राग़त के बा'द जब ख़ुद्दाम ने बेचैनी के आ़लम में आप को इस बारे में बताया, तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुठ्ठी भर ख़ाक उठाई और आयतुल कुर्सी पढ़ कर उस पर दम किया और उन शर अंगेज़ों की त़रफ़ फेंक दी, वोह मिट्टी जिस शख़्स पर भी पड़ी, वोह बे ह़िसो ह़रकत हो कर गिर पड़ा, जब उन के साथियों ने येह माजरा देखा तो घबरा कर वहां से भाग गए और अपने एक मज़्हबी पेश्वा के सामने जा कर सारा माजरा बयान किया और उस से मदद की दरख़्वास्त की, पहले तो वोह ख़ामोश रहा, फिर कुछ देर बा'द कहने लगा कि यक़ीनन वोह दरवेश अपने मज़्हब में बहुत बड़ा बुज़ुर्ग और साह़िबे कमालात है, लिहाज़ा उस का मुक़ाबला सिर्फ़ जादू के

ज़रीए ही किया जा सकता है, फिर उस ने उन सब को एक मन्तर सीखा कर कहा कि मेरे साथ चलो और इस मन्तर को पढ़ते रहना, जब वोह लोग अना सागर के क़रीब पहुंचे तो अपने मज़्हबी पेश्वा के पीछे खड़े हो कर मन्तर पढ़ने लगे, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के एक मुरीद ने उन्हें मन्तर पढ़ते देखा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इत्तिलाअ़ दी, आप ने फ़रमाया कि उन का बातिल जादू हम पर हरगिज़ असर अन्दाज़ नहीं हो सकता, बल्कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन का येह मज़्हबी पेश्वा राहे रास्त पर आ जाएगा, येह कह कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़ में मश्ग़ूल हो गए, नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाई, तो उन का पेश्वा थर थर कांपने लगा और उस के मुंह से रह़ीम रह़ीम की आवाज़ें निकलने लगीं, जब उन ग़ैर मुस्लिमों ने येह सुना तो उस को बुरा भला कहने लगे, उन के मलामत करने पर वोह ग़ुस्से में आ गया और जो भी चीज़ हाथ लगी, उस से अपने ही साथियों पर ह़म्ला करने लगा, जिस की वज्ह से वोह सब जान बचा कर वहां से भाग खड़े हुवे। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और आप के अ़क़ीदत मन्द ख़ामोशी से एक त़रफ़ खड़े येह सारा मन्ज़र देखते रहे, फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने ख़ादिम के हाथ पानी से भरा हुवा एक प्याला उसे पीने के लिये दिया, जिसे पीते ही उस के दिल से कुफ़्रो शिर्क की तारीकियां छट गईं और वोह दौड़ कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़दमों में गिर कर इस्लाम ले आया, इस्लाम लाने के बा'द उस ने ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की, कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नूरानी ह़ुस्नो जमाल को देख कर मुझे शादी (या'नी ख़ुशी) मह़सूस हुई है, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि चलो इसी वज्ह से आज से हम तुम्हारा नाम शादी रखते हैं। (सीरतुल अक़्त़ाब, स. 143 ता 144 मुलख़्ख़सन)

*दिल से दुन्या की मह़ब्बत की मुसीबत दूर हो*
*दे दो इ़श्क़े मुस्त़फ़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*
*तेरी उल्फ़त में जियूं तेरी मह़ब्बत में मरूं*
*हो करम ऐसा शहा ! ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि औलिया उल्लाह का अन्दाज़े तब्लीग़ भी किस क़दर आ़लीशान होता है कि येह ह़ज़रात मुश्किल से मुश्किल ह़ालात में भी सब्रो इस्तिक़ामत का दामन हाथों से नहीं छोड़ते बल्कि राहे ख़ुदा में आने वाली तकालीफ़ को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी समझ कर ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करते हुवे मन्ज़िले मक़्सूद की जानिब बढ़ते रहते हैं।

## मजलिसे मज़ाराते औलिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की धूमें मचाने, इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने और लोगों के दिलों में औलिया उल्लाह की मह़ब्बतो अ़क़ीदत बढ़ाने में मसरूफ़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या के कमो बेश 200 मुमालिक में मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है। सारी दुन्या में मुनज़्ज़म त़रीक़े से मदनी काम करने के लिये 100 से ज़ियादा शो'बाजात क़ाइम हैं, इन्हीं में से एक शो'बा "**मजलिसे मज़ाराते औलिया**" भी है, इस शो'बे के ज़िम्मेदारान दीगर मदनी कामों के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰہُ الْمُبِین के मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ दीनी ख़िदमात सर अन्जाम देते हैं। मसलन ह़त्तल मक्दूर साह़िबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का इनए़क़ाद करना, मज़ारात से मुल्ह़क़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले ठहराना और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाना, जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं, नीज़ दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त व हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाती है। अय्यामे उ़र्स में साह़िबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब के तह़ाइफ़ पेश करने नीज़ साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ु-लफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साह़िबान से वक़्तन-फ़-वक़्तन मुलाक़ात कर के इन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क में होने वाले मदनी कामों से आगाह करने की कोशिश भी की जाती है।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*
*ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आइये ! ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की एक और करामत के बारे में सुनते हैं कि जिस में आप ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे एक ग़ैर मुस्लिम राजा के इक्तिदार के ज़वाल की पेशगी ख़बर इरशाद फ़रमाई । चुनान्चे,

## तुम्हारे मुंह से जो निक्ली वोह बात हो के रही...

अजमेर के राजा ने सल्तनत के बल बूते पर जब मुसलमानों को तक्लीफ़ें देना शुरूअ़ कीं, तो उस के कुफ़्र से बाज़ न आने और मुसलमानों पर बिला वज्ह ज़ुल्मो सितम ढाने की वज्ह से एक मरतबा ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जलाल में आ कर उस के बारे में फ़रमाया कि अगर येह बाज़ नहीं आता तो ज़िन्दा ह़ालत में लश्करे इस्लाम के ह़वाले कर दिया जाएगा और फिर येही हुवा । चुनान्चे,

सुल्त़ान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने एक ख़्वाब में अपने आप को ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने पाया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह फ़रमाते हुवे सुना कि ऐ शहाबुद्दीन, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे हिन्द की बादशाहत अ़त़ा फ़रमा दी है, लिहाज़ा यहां आ कर इस ज़ालिम राजा को कैफ़रे किरदार तक पहुंचा । जब सुल्त़ान शहाबुद्दीन ने बेदार हो कर अपने दरबार के मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों के सामने येह ख़्वाब बयान किया तो सब ने उसे हिन्द की फ़तह़याबी की मुबारक बाद दी । चुनान्चे, वोह अपनी फ़ौज के साथ हिन्द की त़रफ़ रवाना हुवा और अजमेर पहुंच कर उस ने राजा के साथ कई जंगें लड़ीं, जिन के नतीजे में राजा को बिल आख़िर इब्रतनाक शिकस्त हुई और ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान के मुत़ाबिक़ उसे ज़िन्दा गिरिफ़्तार कर के सुल्त़ान ग़ौरी के सामने पेश कर दिया गया । (सीरतुल अक़्त़ाब, स. 148 / अनीसुल अर्वाह़, स. 120, मफ़्हूमन व मुलख़्ख़सन)

*तुम्हारे मुंह से जो निकली वोह बात हो के रही*
*कहा जो दिन को, कि शब है तो रात हो के रही*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़्वाजए ख़्वाजगान, ख़्वाजए अजमेर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी करामत के ज़रीए रात के मुख़्तसर हि़स्से में अजमेर शरीफ़ से हज़ारों मील दूर, मक्कए मुकर्रमा की पुर कैफ़ फ़ज़ाओं में तशरीफ़ ले जाते और पूरी रात त़वाफ़े ख़ानए का'बा में मश्ग़ूल रहते और फिर फ़ज्र से पहले पहले अपने हुजरे में वापस तशरीफ़ ले आते। चुनान्चे,

## हर रात त़वाफ़े ख़ानए का'बा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 31 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़"** के सफ़ह़ा 24 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कोई मुरीद या अहले मह़ब्बत, अगर ह़ज या उ़मरे की सआ़दत पाता और त़वाफ़े का'बा के लिये ह़ाज़िर होता तो देखता कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल हैं। उधर अहले ख़ाना और दीगर अह़बाब येह समझते कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने हुजरे में मौजूद हैं। बिल आख़िर एक दिन येह राज़ खुल ही गया कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बैतुल्लाह शरीफ़ ह़ाज़िर हो कर सारी रात त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल रहते हैं और सुब्ह़ अजमेर शरीफ़ वापस आ कर बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाते हैं।

(इक़्तिबासुल अन्वार, स. 373, मुलख़्ख़सन)

*ह़ज की मिल जाए सआ़दत सब्ज़ गुम्बद देख लूं*
*हाथ उठा कर, कर दुआ़ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आ़म त़ौर पर इन्सान जब इस दारे फ़ानी से कूच कर जाता है, तो उस से ह़ासिल होने वाले फ़वाइद व स-मरात का सिलसिला भी ख़त्म हो जाता है, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दों का

मुआ़मला इस के बर अ़क्स होता है, वोह नुफ़ूसे कुदसिया न सिर्फ़ अपनी ह़याते ज़ाहिरी में मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ाइदे पहुंचते और उन की ख़ाली झोलियों को मुराद से भरते हैं, बल्कि उन की इनायतों और नवाज़िशों का येह सिलसिला बा'दे विसाल भी जारी व सारी रहता है। दुख्यारे, बे सहारे, ग़म के मारे, औलाद की ने'मत के त़लबगार, डॉक्टरों और ह़कीमों की जानिब से ला इलाज क़रार दिये जाने वाले और गुनाहों की आलूदगियों से नजात पाने के ख़्वाहिश मन्द, हज़ारहा अफ़राद उन के आस्तानों पर आते और मन की मुरादें पाते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती अजमेरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वोह अ़ज़ीम वली हैं कि जब तक आप ह़याते ज़ाहिरी से मुत्तसिफ़ रहे, मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ैज़याब फ़रमाते रहे और आज जब कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाले ज़ाहिरी को सदियां गुज़र चुकी हैं, मगर इस के बावुजूद भी आप का बाबे करम आप के चाहने वालों के लिये उसी त़रह़ खुला हुवा है, आज भी लोगों के दिलों पर आप की हुक्मरानी का सिक्का क़ाइम है, नीज़ मज़ारे पुर अन्वार पर आने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ा देते और उन की दस्तगीरी फ़रमाते हैं।

*या मुईनुद्दीन ! आओ अब मदद के वासित़े — हो करम बद ह़ाल पर ऐ चिश्तियों के ताजदार*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 222)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! आइये ! मज़ीद दो करामात सुनते हैं। चुनान्चे,

## अनोखा ख़ज़ाना

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के आस्तानए मुबारका पर रोज़ाना इस क़दर लंगर का एहतिमाम होता कि शहर भर से ग़ुरबा व मसाकीन आते और सैर हो कर खाते। ख़ादिम जब अख़राजात के लिये आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज करता तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुसल्ले का कनारा उठा देते, जिस के नीचे रह़मते इलाही से ख़ज़ाना ही ख़ज़ाना नज़र आता, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ादिम से फ़रमाते कि आज के लंगर के लिये जितनी रक़म की ज़रूरत है, यहां से उठा लो। चुनान्चे, ख़ादिम ह़स्बे ज़रूरत ले लेता। (इक़्तिबासुल अन्वार, स. 376, मुलख़्ख़सन)

*झोलियां भरते हो मंगतों की मुझे भी हो अ़ता*

*ह़िस्सए जूदो सख़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 537)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ख़्वाजा के सदके़ सिह़्ह़त याबी

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ार से बहुत कुछ फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल होते हैं। मौलाना बरकात अह़मद साह़िब मर्ह़ूम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो मेरे पीर भाई और मेरे वालिदे माजिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्द थे। उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि एक ग़ैर मुस्लिम जिस के सर से पैर तक फोड़े थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है कि किस क़दर थे, ठीक दोपहर को आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरियों और पथ्थरों पर लोटता और कहता : "ऐ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जलन हो रही है।" तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया है।

(मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 384, बित्तग़य्युर क़लील)

*ख़्वाजए हिन्द वोह दरबार है आ'ला तेरा*

*कभी मह़रूम नहीं मांगने वाला तेरा*

*जो गया अजमेर में दिल की मुरादें पा गया*

*मेरे ख़्वाजा के सख़ी दरबार पर लाखों सलाम*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## रिसाला "फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़" का तआ़रुफ़

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़्वाजए ख़्वाजगान ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल होने और आप की सीरत व करामात से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 2 रिसाले "**ख़ौफ़नाक जादूगर और फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़**" का मुत़ालआ़

करना इन्तिहाई मुफ़ीद है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन रिसालों में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की सीरत, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दाता अ़ली हजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़क़ीदत, आप की सादगी, पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक, अ़फ़्वो दरगुज़र, ख़ौफ़े ख़ुदा, मुसलमानों की पर्दा पोशी, मलफ़ूज़ात और करामात को इन्तिहाई ह़सीन व आसान अन्दाज़ में बयान किया गया है । लिहाज़ा आज ही इन रिसालों को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर ख़ुद भी इन का मुत़ालआ़ कीजिये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये । दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इन रिसालों को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बयान का ख़ुलासा

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज के बयान में हम ने अ़त़ाए रसूल, बहारे चिश्त के फूल ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामात सुनने की सआ़दत ह़ासिल की । आप सारी ज़िन्दगी दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये कोशां रहे, इस मक़्सद के ह़ुसूल के लिये दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की त़रह़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर सफ़र फ़रमाए नीज़ इस राह में आने वाली तकालीफ़ को ख़न्दा पेशानी के साथ बरदाश्त किया । आप की करामात और रो'ब व दब दबा देख कर बे शुमार ग़ैर मुस्लिमों ने इस्लाम क़बूल किया और लाखों लोगों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया । ह़ाकिमे सब्ज़वार जो कि एक ज़ालिमो जाबिर ह़ुक्मरान था, मगर आप की करामत की बरकत से उसे तमाम बुरे अ़क़ीदों और गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई, ह़त्ता कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे अपनी ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा । आप की एक करामत येह भी थी कि जादूगरों ने जब आप का मुक़ाबला करना चाहा तो आप ने उन के जादू के असर को ज़ाइल कर दिया और आयतुल कुर्सी पढ़ कर दम की हुई मिट्टी उन

पर फेंकी, तो उन के जिस्म में हिलने जुलने की ताक़त ही न रही बल्कि उन का मज़्हबी पेश्वा आप की करामत देख कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को सेंकड़ों मील दूर की आवाज़े सुनने और मुर्दे ज़िन्दा करने के इ़लावा दीगर कई करामतों से नवाज़ा था, येही वज्ह है कि एक मरतबा आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपनी जूतियां आग में डालीं, तो आग ने उन्हें न जलाया नीज़ आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ करामती तौ़र पर हर रात अपने हु़जरे से हज़ारों मील दूर वाके़अ़ बैतुल्लाह शरीफ़ जा कर रात भर त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहते और फ़ज्र से पहले वापस तशरीफ़ ले आते, आप के दरबार में साइलीन की आमदो रफ़्त रहती और आप अपने मुसल्ले के नीचे से रह़मते इलाही के ख़ज़ाने उन में तक़्सीम फ़रमाते रहते।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص ۳۴۳)

*सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें*
*नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले*

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب !     صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## छींकने की सुन्नतें और आदाब

**आइये !** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से छींकने की चन्द सुन्नतें व आदाब सुनते हैं। पहले दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

1. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को छींक पसन्द है और जमाही ना पसन्द।

(بخاری، ۴/۱۶۳، حدیث: ۶۲۲۶)

**2.** जब किसी को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं : رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ और अगर वोह رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ कहता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़म फ़रमाए । (معجم کبیر، ۳۵۸/۱۱،حدیث:۱۲۲۸۴)

❖ छींक के वक़्त सर झुकाइये, मुंह छुपाइये और आवाज़ आहिस्ता निकालिये, छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माकत है । (ردُّالمُحتار،۹/۶۸۴) ❖ छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना चाहिये (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, सफ़ह़ा 3 पर त़ह़त़ावी के ह़वाले से छींक आने पर ह़म्दे इलाही को सुन्नते मोअक्कदा लिखा है) बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن या اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे ❖ सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन یَرْحَمُكَ الله (या'नी **अल्लाह** तुझ पर रह़म फ़रमाए) कहे और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 119) ❖ जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : یَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : یَهْدِیْكُمُ اللهُ وَیُصْلِحُ بَالَكُمْ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे ।) (फ़तावा हिन्दिया, 5 / 326) ❖ जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फैर लिया करे तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा । (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 396) ❖ ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा । (مرقاۃ المفاتیح، ۸/ ۴۹۹،تحت الحدیث:۴۷۳۹)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब “**सुन्नतें और आदाब**” हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

*सुन्नतें सीखने, तीन दिन के लिये*
*हर महीने चलें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

# दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक और 1 दुआ़

**﴾1﴿ शबे जुमआ़ का दुरूद :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

**बुज़ुर्गों** ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमआ़ (जुमआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

**﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

**﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े :** صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

**जो** येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ٢٧٧)

**﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :**

جَزَی اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

**ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللہِ

**हज़रते** अहमद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** हासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

**एक** दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن को तअज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है!!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

## हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

**ग़राइबुल कुरआन** सफ़्हा 187 पर एक रिवायत नक्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये।

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**